JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण–सरंक्षण हेतु नानक–दषन की प्रेरणा

– डॉ॰ रविन्द्र गासो

भाोध सारांष :

औद्योगीकरण के बाद पर्यावरण के महासंकट में हवा, पानी, पृथ्वी स्वयं अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहे हैं। राजनीतिक , आर्थिक सत्ता–शक्तियां और नागरिक समाज पर्यावरण–संरक्षण के लिए सक्रिय हैं। लेकिन पर्यावरण के लिए बड़ा आंदोलन बड़े क्रान्तिकारी दार्शनिक आधारों के बिना असंभव है। गुरु नानक देव जी का दर्शन प्रकृति को ईश्वर कृत सत्य मानता है, मिथ्य नहीं। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक पर्यावरण को मानवतावादी सिद्धान्तों द्वारा संरक्षित करने वाले गुरु नानक देव जी प्रकृति को प्रभु की शक्ति का प्रकटीकरण बताकर बड़ा दार्शनिक–सूत्र देते हैं। प्रभु की 'कुदरति' में मानव–ज्ञान, मानव–व्यवहार, आचार–आचरण सब शामिल हैं। पवन को गुरु, पानी को पिता और धरती को माता का दर्जा देने वाला गुरु जी का श्लोक पर्यावरण–संरक्षण हेतु वैश्विक गीत बन सकता है। जैसे कि 'गगन में थाल'' वाली उनकी आरती को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 'विश्व–गान' कहा था।

मूल आलेख :

औद्योगीकरण के बाद अर्थात् अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर हाल–फिलहाल तक दुनिया भर में प्रकृति और पर्यावरण पर भारी दबाव लगातार बढ़ रहा है, जो अब महासंकट बन गया है। हवा, पानी, पृथ्वी स्वयं इस महासंकट में अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जूझ रहे हैं। दुनिया की राजनीतिक और आर्थिक सत्ता–शक्तियां इसका हल ढूँढने के लिए लोगों को (समाज को) जागृत कर रही हैं। वास्तव समस्या या समस्या की वास्तविकता यह है कि औद्योगिक–विकास का मॉडल मुनाफाखोर लम्पट पूंजी के हाथों में आकर विज्ञान को प्रकृति का शत्रु ही नहीं बना रही बल्कि प्राकृतिक संसाधनों–स्रोतों को मुनाफे लिए लूट रही है। मुनाफाखोर पूंजी धरती के ऊपर तथा धरती के अन्दर प्रदूषण ही नहीं कर रही बल्कि हवा, पानी, खनिज पदार्थों का खतरनाक मात्रा में दोहन कर रही है। जनसंख्या विस्फोट, जंगल व पेड़ों का कम होना, वाहनों की लगातार बढ़ती संख्या, उद्योगों और आबादियों की गंदगी/कूड़ा–कर्कट पर्यावरण–संकट के अन्य प्रमुख कारण हैं।

दूसरी ओर नागरिक–समाज पर्यावरण और पृथ्वी को बचाने के लिए पूरे विश्व में सक्रिय है, संगठित है। सरकारें और मार्किट की शक्तियां जागृति–सम्मेलनों, प्रचार–प्रसार में लगी हैं। लेकिन पर्यावरण–संरक्षण के लिए तमाम कोशिशें बड़े जन–आंदोलन में तबदील नहीं हो पा रहीं।

पर्यावरण के लिए बड़ा आंदोलन बड़े दार्शनिक आधारों के बिना संभव नहीं। जन–आंदोलन का मूल चरित्र परिवर्तनकारी होता है। निश्चित रूप से उसके लिए यथास्थितिवादी–दर्शन काम नहीं करेगा।

गुरु नानक देव जी का दर्शन क्रान्तिकारी परिवर्तन की प्रस्तावना ही नहीं, सम्पूर्ण परिकल्पना है। धार्मिक सुधार के लिए गुरु जी सामाजिक सुधार को अनिवार्य मानते हैं। आप युग–द्रष्टा ही नहीं युग–स्रष्टा भी हैं। आपका जन्म 1469 ई॰ में लाहौर के समीप राए भोए की तलवंडी (वर्तमान में ननकाना साहिब) में हुआ था। सिक्ख–धर्म के प्रवर्तक प्रथम गुरु मध्यकालीन निर्गुण भक्ति की ज्ञानमार्गी सन्त काव्यधारा के प्रमुख कवि श्री गुरु नानक देव जी ने 25 वर्ष चार लम्बी सांस्कृतिक–धार्मिक यात्राएँ (उदासियां) कीं। आपकी वाणी (कुल 974 पद) संगीत के 19 रागों में निबद्ध है।

धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र, भाषा, संस्कृति के आधार पर किसी भेदभाव, ऊँच–नीच को ईश्वर–विरुद्ध कृत्य मानकर आपने सामाजिक–धार्मिक पर्यावरण को मानवतावादी सिद्धान्तों द्वारा संरक्षित किया।

''सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ/इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ।'' अर्थात् सब को ऊँचा कहना चाहिए। मुझे नीच कोई नहीं दिखता। एक निरंकार ने सभी शरीर सुसज्जित किए (बनाए) हैं और समस्त संसार (तीनों लोकों में) एक ही प्रकाश का प्रसार है।[1]

गुरु नानक देव जी का दर्शन पर्यावरण संरक्षण हेतु बहुत प्रेरणादायक ही नहीं भविष्य के रास्ते भी दिखाता है।

'पउणै पाणी अगनी का मेलु। चंचल बुधि का खेलु।' अर्थात् शरीर हवा, पानी और अग्नि आदि पांच तत्वों के मेल से बना है। यह चंचल और चपल बुद्धि का खेल है।[2]

'सचे तेरे खंड सचे तेरे ब्रहमंड/सचे तेरे लोअ सचे तेरे आकार' अर्थात् हे प्रभु! तुम्हारे (उत्पादित) और ब्रह्माण्ड सत हैं (वस्तु तत्व हैं, सत्य हैं, सद्भाववान हैं; केवल मरीचिका नहीं हैं।) तुम्हारे (उत्पादित) लोक और आकार भी सत् हैं।)[3] गुरु जी निराकार ईश्वर द्वारा बनाई इस दुनिया को मिथ्या मानने वाले दर्शन को रद्द करने का क्रान्तिकारी बुनियादी काम करते हैं।

'गृहस्थी' में रहकर ही प्रभु की ध्यान–साधना द्वारा माया से निर्लिप्त होकर हरि में समाहित रहें 'अंजनि माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पायीऐ' का आदेश देकर गुरु जी आध्यात्मिक–दर्शन की ऊहा–पोह की स्थिति को समाप्त करते हैं।)

'कर्म–योग' को अच्छे–नेक कर्मों हक–हलाल की कमाई, दूसरों का अधिकार– अस्मिता न छीनना, शोषण न करना, सच्चे हृदय से भेद–भाव व ऊँच–नीच रहित जीवन–दर्शन, ईमानदारी की भावना और चरित्र की शुद्धता, विनम्रता आदि से जोड़ कर आपने एकांगी–अकेले 'योग' और 'ज्ञान–योग;' के भ्रष्ट, अनैतिक, शोषक चरित्र को अलग–थलग किया। आपने दृढ़ता से स्पष्ट किया कि (अच्छे कर्मों) के बिना भक्ति और ज्ञान में कोई सार्थकता नहीं।

गुरु नानक देव जी 'श्रम' (किरत) को सर्वोपरि मानते हैं। जीवन के अन्तिम 18 वर्ष आपने स्वयं करतारपुर में खेती की और सामाजिक–धार्मिक जीवन का मॉडल '**किरत करो (श्रम करो), वंड छको (बांट कर तृप्त होकर खाओ), नाम जपो**' दिया।

गुरु नानक देव जी द्वारा समस्त सृष्टि व प्रकृति को भगवान की **'कुदरति'** मानना और उसे पवित्र व उसकी प्रशंसा को भी पवित्र मानना मानवीय चेतना में सकारात्मक ऊर्जा भरता है। 'कुदरति' को प्रभु की शक्ति का प्रकटीकरण मानना बड़ा क्रान्तिकारी दार्शनिक सूत्र है।

कुदरत दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु।
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु।
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु।
कुदरति खाणा पीणा पैन्णु कुदरति सरब पिआरु।
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान।
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु।
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु।
सभ तेरी कुदरति तूँ कादिरु करता पाकी नाई पाकु।
नानक हुकमै अंदरि वैखै वरतै ताको ताकु।

अर्थात् – जो कुछ दिखाई दे रहा है, तुम्हारी शक्ति की अभिव्यक्ति है; जो कुछ सुना जा रहा है तुम्हारी शक्ति का सूचक है; यह प्रकृति भय का भाव उत्पन्न करती है और सुखों का मूल भी है। प्रकृति के अलौकिक चमत्कार कितनों के भीतर एक भय सा उत्पन्न करते हैं और वे कितनों के लिए सुख का मूल बन जाते हैं। पाताल और आकाश में तुम्हारी प्रकृति प्रकट हो रही है। यह समस्त दृश्यमान जगत् तुम्हारी ही प्रकृति है। वेद, पुराण, पुस्तकें और सम्पूर्ण चिन्तन तुम्हारी ही प्रकृति (के चमत्कार) हैं। खान, पान और परिधान यह समस्त तुम्हारी प्रकृति है। जीवों के भीतर व्याप्त समस्त प्रेम तुम्हारी प्रकृति है। जातियों, वस्तुओं, रंगों में और संसार के जीवों में तुम्हारी प्रकृति प्रकट हो रही है। जीवों में कहीं उत्तमता और अधमता के भाव, कहीं मान और अपमान के भाव तुम्हारी ही प्रकृति के भिन्न–भिन्न रंग हैं। प्राकृतिक नियमों के अनुसार ही वायु, जल, अग्नि और भूमि की धूलि सब तुम्हारी ही प्रकृति को प्रकट करते हैं। हे प्रभु! यह समस्त तुम्हारी शक्ति सक्रिय है। तुम इसके स्वामी हो; इसके स्रष्टा हो; तुम्हारी प्रशंसा पवित्र है; क्योंकि, तुम स्वयं पवित्र हो।

(नानक) प्रभु समस्त रचना को अपने शासन के भीतर रखकर इसकी रक्षा करता है और (सर्वत्र) स्वयं ही विद्यमान है।[4]

इसी तरह गुरु नानक देव जी का 'जपुजी साहिब' में सुविख्यात समादृत श्लोक है :

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि
जिनी नाम धिआइआ गए मसकति घालि
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।

अर्थात् – (जगत के जीवों के लिए) पवन मानो गुरु है, (पवन को गुरु कहने का कारण यह है कि शरीर को क्रियाशील रखने के लिए यह ऐसे ही आवश्यक है जैसे आत्मा के लिए गुरु) 'पवन गुरु गुर शब्द है' – (भाई गुरुदास), जल पिता है और पृथ्वी महती माता है (पृथ्वी के उदर में पानी जाने से ही पृथ्वी से वनस्पति तथा अन्य कितने ही पदार्थ उत्पन्न होते हैं जैसे माता–पिता की रक्त बूंद से बालक का जन्म होता है। अतः पृथ्वी वास्तव में महती माता है और जल पिता है)। दिन खिलाने वाला पुरुष और रात्रि खिलाने वाली स्त्री है। समस्त जगत इसकी गोद में खेल रहा है (काम–काज में संलग्न है)।[5]

गुरु नानक देव जी का पवन को गुरु, पानी को पिता, धरती को माता का रुतबा या गौरव देना पर्यावरण–संरक्षण के लिए विश्व–मानव को बहुत बड़ा क्रान्तिकारी सन्देश है।

गुरु जी का यह श्लोक जन–आंदोलन का वैश्विक–गीत बन सकता है। विश्व की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद होना चाहिए। पवन, पानी और पृथ्वी को बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के जितने भी कार्यक्रम और योजनाएँ हैं, उनमें गुरु नानक देव जी का यह श्लोक प्रसारित होना चाहिए ताकि जीवन और संसार के सार को पर्यावरण–संरक्षण का बुनियादी दर्शन और नैतिक आधार बनाया जा सके।

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती।
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फुलंत जोती।
कैसी आरती होइ।
भवखंडना तेरी आरती।
अनहता सबद वाजंत भेरी।। रहाउ।।

राग धनासरी में गाई जाने वाली इस विलक्षण आरती में गुरु जी फरमाते हैं कि आकाश रूपी थाल में सूर्य–चन्द्र दो दीपक हैं और तारों का समूह जैसे मोती हैं अर्थात् आकाश रूपी थाल में दीपक और मोतियों की

सजावट से हे प्रभु! तुम्हारी अद्भुत आरती हो रही है। सभी जीवात्माओं में अनहद सबद का नगाड़ा बज रहा है – इस ब्रह्म– प्रकाशमय आरती में। इसमें चन्दन के जंगल वाले मलय पर्वत की सुगन्ध धूप है, पवन स्वयं चँवर कर रहा है, सम्पूर्ण वनस्पति पुष्पों के रूप में ज्योति स्वरूप प्रभु की आरती में है। यह कैसी आरती हो रही है? अर्थात् आश्चर्यजनक अद्भुत है यह। प्रभामय, अनहद, सबद रूप निराकार, एक ओंकार, अमूर्त्त ईश्वर भव खँडना है। 'भव' माने यह दुनिया, पृथ्वी, माया। 'अनहद' माने परस्पर दो वस्तुओं के टकराने के बिना चोट की आवाज, 'शून्य' में गूँज अर्थात् आत्मा में ब्रह्म की आवाज जो कोई अन्य नहीं सुन सकता। ईश्वर इस संसार रूपी माया, दुखों का खण्डन (समाप्त) करने वाला है। भव (माया) के सब बंधन–विकार समाप्त करने वाला अनहद–शब्द रूप ईश्वर। सबद की भेरी (नगाड़ा) बज रही है।[6]

भारत के राष्ट्रगान के रचयिता **रवीन्द्रनाथ टैगोर** से एक बार प्रख्यात फिल्म कलाकार **बलराज साहनी**, जो तब **शान्ति निकेतन** में अध्यापक थे, ने प्रश्न किया कि जिस प्रकार भारत का राष्ट्रगान उन्होंने लिखा है तो क्यों न सम्पूर्ण विश्व के लिए भी एक **विश्वगान** भी लिखें? इस पर गुरुदेव ने कहा – वह तो पहले ही लिखा जा चुका है। 16वीं शताब्दी में गुरु नानक देव जी के द्वारा। और यह मात्र इस विश्व ही नहीं अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए गान है। गुरुदेव टैगोर इस आरती से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने स्वयं बांग्ला भाषा में इसका अनुवाद भी किया।[7]

मानव शरीर पाँच तत्त्वों (वायु, अग्नि, जल, आकाश तथा पृथ्वी) से बना है। पाँच ज्ञानेन्द्रियों त्वचा, आँखें, कान, नाक, जिह्वा से मनुष्य क्रमशः महसूस करने, देखने, सुनने, सूँघने, स्वाद का काम लेता है। गुरु नानक देव जी की पांच तत्वों को संरक्षित संवर्द्धित करने के लिए अपनी वाणी में स्थान–स्थान पर अन्तर्दृष्टि देते हैं।

सन्दर्भ

1. भाई जोध सिंह;गुरु नानक वाणी; नैशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया; दिल्ली; पांचवां संस्करण 1996; पृ॰ 45
2. वही; पृ॰ 29
3. डॉ॰ रविन्द्र गासो; गुरु नानक कृत 'आसा दी वार' : एक अध्ययन; अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली; प्रथम संस्करण 2022; पृ॰ 21
4. डॉ॰ तारन सिंह; गुरु नानक वाणी प्रकाश; पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला; 1986; पृ॰ 539–40)
5. डॉ॰ रविन्द्र गासो; गुरु नानक कृत 'जपुजी साहिब' : एक अध्ययन; अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली; प्रथम संस्करण 2022; पृ॰ 64–65
6. डॉ॰ रविन्द्र गासो; गुरु नानक देव जी : व्यक्तित्व और विचारधारा; अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली; प्रथम संस्करण 2022; पृ॰ 164–165
7. डॉ॰ सुभाषचन्द्र; गुरु नानक की विरासत; सत्य शोधक फाउंडेशन, कुरुक्षेत्र; 2019, पृ॰ 19